Volume I, Issue XV
October To December 2017

2017-18

ISSN 2394 - 3807
E-ISSN 2394 - 3513
Impact Factor - 4.455 (2016)

Divya Shodh Samiksha

(An International Multidisciplinary Refereed Journal)

दिव्य शोध समीक्षा

Editor - Ashish Narayan Sharma

Office Add. "Shree Shyam Bhawan", 795, Vikas Nagar Extension 14/2, **NEEMUCH** (M.P.) 458441, (INDIA)
Mob. 09617239102, **Email :** dssresearchjournal@gmail.com, **Website :** www.dssresearchjournal.com

Index/अनुक्रमणिका

01. Index/ अनुक्रमणिका 01

02. Regional Editor Board / Editorial Advisory Board 03/04

03. Referee Board 05

04. Spokesperson 07

05. Sustainable Energy 09
(Dr. Neeraj Dubey)

06. An Overview of Cyber Crime : Types and Preventions 12
(Naveen Dodeja, Prof. Shiv Singh Sarangdevot)

07. Muted Woman In The Sound And The Fury 15
(Disha Sharma)

08. दिव्यांगजनों को उच्च शिक्षा में आने वाली समस्याएं 17
(डॉ. दिव्या शुक्ला)

09. 'साक सुन्ना प्रीत पित्तल' क्हानी संग्रैह् च चित्रत नारी जीवन 19
(डॉ. दीपिका मैहरा)

10. डोगरी उपन्यासें च मध्यम वर्ग दी राजनीति च सक्रिय हिस्सेदारी 21
(डॉ. मनोज हीर)

11. ''वैश्विक जरूरतां बनाम खेतरिय पंछान'' डोगरी भाषा दे संदर्भ च 23
(सोनिका जसरोटिया)

12. डोगरी लोक-गीतें च गैह्ने-बंधे 25
(डॉ. प्रीति रचना)

13. डोगरी कहानियें च धार्मिक भाईचारा : इक नज़र 28
(शिव कुमार खजूरिया)

14. बाबा शिवि जी आस्था ते मानता आहले देव स्थान दे इतिहास उप्पर इक झांक 30
(शमा रानी)

15. जबालदर्शन उपनिषद् में अष्टांग योग 31
(डॉ. पुनीत कुमार मिश्र)

16. ''हयवदन'' का सम्यक विवेचन 35
(डॉ. रमेश टण्डन)

17. हिन्दी भाषा शिक्षण में भाषा विज्ञान की उपयोगिता 37
(संदीप सिद्ध)

18. भारत का पिकासो-'मकबूल फिदा हुसैन' 40
(डॉ.यतीन्द्र महोबे)

DSS Divya Shodh Samiksha (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
ISSN 2394-3807, E-ISSN 2394-3513, Impact Factor - 4.455 (2016) October to December 2017

भारत का पिकासो- 'मकबूल फिदा हुसैन'

डॉ.यतीन्द्र महोबे *

प्रस्तावना - भारतीय आधुनिक कला जगत में **'फिदा'** का नाम सर्वाधिक चर्चित नाम है। सबसे अधिक चर्चा में रहने वाले हुसैन निरंतर कुछ नया करते रहते हैं। कला जगत को यह सदैव जानने की इच्छा रहती है कि आजकल हुसैन क्या कर रहें है। हुसैन कुछ महत्वपूर्ण अपने ढंग की अनोखी फिल्म बनाकर भी चर्चा में रहे। ऐसे चर्चित चित्रकार का जन्म पँढारपुर (महाराष्ट्र) में 1915 में हुआ था। वे एक गरीब सुलेमानी बोहरा परिवार में जन्में थे लेकिन हुसैन का बचपन इन्दौर मे बीता । इन्दौर में उनके पिता कपडा मिल में अकाउन्टेंट के रूप में काम करते थे। हुसैन 3-4 माह के ही थे तभी उनकी माँ का निधन हो गया। किसी भी बच्चे के लिए शुरू से ही माँ की गोद छीन जाए वह हमेशा एक बड़ी कमी के रूप में बराबर बनी रहती है। हुसैन को यह कमी शुरू से ही मिल गई। जिसने हुसैन के मन पर गहरा असर डाला। माँ के बाद हुसैन के बाबा उसे बहुत प्यार देते थे लेकिन दुर्भाग्यवश पाँच -छ: वर्ष की उम्र मे ही हुसैन को इस प्यार से भी वंचित होना पड़ा। इसके बाद हुसैन को सिद्धपुर (गुजरात)में नाना के घर भेज दिया गया जहाँ उन्हें प्रचलित धार्मिक संस्कार मिले जिससे बालक हुसैन के विकास पर महत्वपूर्ण असर पड़ा। भाषा, साहित्य,धर्म,कैलिग्राफी आदि की पृष्ठ भूमि हुसैन को यहीं से मिली छोटी सी उम्र में हुसैन ने यहाँ पर शायरी भी शुरू कर दी थी । किशोरावस्था में जब हुसैन इन्दौर आए तो वहाँ के वातावरण में हिन्दु-मुस्लिम दोनों संस्कृतियों को इन्होंने करीब से देखा। इन दोनों ही संस्कृतियों का हुसैन की विकास यात्रा में महत्वपूर्ण योगदान है। 17 वर्ष की उम्र में कला प्रदर्शनी में इनको एक स्वर्णपदक भी मिला। प्रोत्साहन के लिए स्वर्ण पदक मिलना बहुत ही महत्वपूर्ण था। इन्होंने कला की शिक्षा के लिए सायंकालीन कक्षाओं में जाना शुरू कर दिया उनकी समझ और विकसित हुई और आगे की कला शिक्षा के लिए हुसैन मुम्बई पहुँचे लेकिन परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं थी और हुसैन बापस इन्दौर आ गए। 22 वर्ष की उम्र में आते - आते हुसैन पूरे आत्मविश्वास के साथ पुन: मुम्बई आए। वह वहाँ अपने पैर पर खड़े होने की कोशिश कर वहाँ पोस्टर बनाने का काम करने लगे और अपने आप को पूरी तरह स्थापित कर लिया। काम करने की आदम्य शक्ति और लालसा ने हुसैन को बम्बई प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप से जोड़ दिया। लेकिन इस पूरे दौर में सिनेमा के पोस्टरों ने आर्थिक तौर पर हुसैन को काफी बल प्रदान किया।

हुसैन को पेंटर के रूप में चर्चा मिली साथ ही उन्हें एक फिल्म मेकर के रूप में भी जाना गया । हुसैन का मानना था 'मैं घोड़े बेचता हूँ और फिल्में बानता हूँ' 1968 में हुसैन की एक लघु फिल्म 'थ्रु द आइस ऑफ ए पेंटर' इस फिल्म को बर्लिन फिल्म महोत्सव में स्वर्ण भालू पुरस्कार मिला से सम्मानित किया गया इसलिए जब भी हम इनके चित्रों को देखते है, तो हमें पेंटर की निगाह ही नहीं मिलती बल्कि एक फिल्म मेकर का भी एहसास होता है। हुसैन ने अपने चित्रों में माध्यम के तौर पर तैलचित्र,जलरंगीय,म्यूरल तथा कई तरह से विभिन्न माध्यमों में भारतीय लोक जीवन को अपने चित्रों में उतारा। हुसैन की सर्वश्रेष्ठ कृतियों में 'दो स्त्रियों का संवाद' (1957) ,'मकड़ी और लैब के बीच' (1958) ,'जमीन' (1955),'दुपट्टों में तीन औरतें'(1958) , 'नीली रात' (1959), 'घोड़ा' (1958) ऐसे चित्र हैं, जो उस दौर में हुसैन को रचनात्मक दृष्टि के साथ उसकी सक्रियता को प्रमाणित करते है और सार्थक भी।

एम.एफ.हुसैन (मकबूल फिदा हुसैन) समकालीन भारतीय चित्रकला में बड़ा चर्चित और विख्यात नाम है, आज शायद ही ऐसा कोई व्यक्ति हो जो (चाहे वह कला क्षेत्र से जुड़ा हो अथवा न हो) इनके नाम से परिचित न हो। हुसैन लगभग 1937 से अपनी अंतिम यात्रा तक कला के क्षेत्र से निरंतर जुड़े रहे और अनगिनत चित्रों का निर्माण किया ।

कला के प्रति अटूट लगन, संघर्ष एवं प्रेम के बलबूते आज भारतीय आधुनिक चित्रकला को नई पहचान देने में मकबूल फिदा हुसैन का योगदान अहम रहा है। ये पूर्णत: आकृति मूलक चित्रकार थे तथा आकृतियाँ इनके चित्रों में विशेष महत्व रखती थी। इन्होंने अपनी इस अद्वितीय मानव आकृतियों के दम पर अनेकों पुरस्कार एवं प्रसिद्धि हासिल की है। वहीं कई बार ऐसी आकृतियों को भी अपने चित्रों में स्थान दिया जो 'नग्न' होने के साथ-साथ भारतीय संस्कृति एवं धर्म विरूद्ध थीं, जिसने हुसैन को आलोचनाओं के कटघरे में लाकर खड़ा कर दिया था।

वर्तमान में उनके चित्रों की कीमत डेढ-दो हजार रूपये प्रति वर्ग इंच के हिसाब से आंकी जाती है, हुसैन ने अपने रेखाचित्रों में भी आकृतियों को स्थान दिया और इन आकृतियों के चित्रण के लिए कैनवास भी छोटा पड़ता था। आज वह हमारे बीच नहीं है लेकिन एक कलाकार के रूप में आज भी कला जगत के लिए प्रेरणा स्रोत बने हुए है।

एम.एफ.हुसैन ने अपने कैनवास के बढ़ते आकार पर एक कविता के माध्यम से कहा है -

'मुझे भेजो सफेद बर्फ भरे आसमान का एक वर्क
जिस पर कोई खरोंच न हो,
उस पर मैं किस तरह पेंट कर पाऊँगा वह सफेद हरफों से
जो तुम्हारे बेपनाह दु:ख को
चारों ओर से घेर सके ?
जब मैं पेंट करना शुरू करूँ
तो तुम अपने हाथों में आसमान को थाम लेना
क्योंकि मुझे अपने कैनवास का
फैलाव मालूम नहीं है।'[1]

कला क्षेत्र में अपने कदम मजबूत करने हुसैन साहब 1937 में बंबई आ गये। उन्होंने किसी महाविद्यालय या अन्य शैक्षणिक संस्था में कला की

* सहायक प्राध्यापक (चित्रकला) शासकीय या.सु.ना.मु.महिला महाविद्यालय, नरसिंहपुर (म.प्र.) भारत